शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
**UGC Aproved Journal No. 40908**

# "अस्पृश्यता उन्मूलन व अछूतोद्धार एवं गांधीजी"

**डॉ. बनवारीलाल मैनावत**

*व्याख्याता, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय उनियारा, टोंक (राजस्थान)*

***शोध सारांश***

*भारतीय समाज में अस्पृश्यता की प्रथा शरीर में कोढ़ के समान है एवं मानवता के लिए कलंक है। महात्मागांधी ने इसके उन्मूलन के लिए अथक प्रयास किये थे। उन्होंने बताया कि यदि अस्पृश्यता को समाप्त नहीं किया गया तो भारतीय समाज का विकास सम्भव नहीं है और ना ही भारत देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाया जा सकता है। गांधीजी की अस्पृश्यता उन्मूलन सम्बन्धी मूल भावना की झलक अनेकों साहित्यिक लेखों तथा सिनेमाई चल–चित्रों में भी देखने को मिली है। जहाँ हम 21वीं सदी में अन्तरिक्ष व वैज्ञानिक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं वहीं अस्पृश्यता की जड़ें भारतीय समाज में आज भी ग्रामीण परिवेश में देखने को मिलती है। जोकि भारतीय समाज के लिए एक अभिशाप है। भारत को विकसित देशों की श्रेणी में लाने के लिए अस्पृश्यता की प्रथा को समाज से पूर्णत उखाड़ फेंकना होगा। यही गांधीजी की मूल भावना व प्रयास था।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

**डॉ. बनवारीलाल मैनावत ,** "अस्पृश्यता उन्मूलन व अछूतोद्धार एवं गांधीजी",
शोध मंथन जून 2017,
पेज सं0 75.78
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No. 13(SM420)

**प्रस्तावना**

गांधीजी से पहले कबीर, नानक, राजाराम मोहनराय, दयानन्द, विवेकानन्द आदि ने अस्पृश्यता उन्मूलन के प्रयत्न किये किन्तु उन्हें वास्तविक सफलता नहीं मिली। गांधीजी ने अस्पृश्यता उन्मूलन के व्यावहारिक प्रयत्न किये और काफी सफलता मिली। गांधीजी अस्पृश्यता को हिन्दू समाज का कौढ मानते थे और जीवन भर इसके खिलाफ संघर्ष करते रहे। वैसे तो गांधीजी वर्णाश्रम के पक्ष में थे लेकिन ऐसी मानने के बावजूद छुआछुत को वे समाज की प्रगति में बाधक मानते थे। उनके अनुसार समाज में सभी व्यक्तियों की स्थिति समान होनी चाहिए और बराबर का अधिकार भी मिलना चाहिए। वर्णव्यवस्था की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई थी तो इसका उद्देश्य काम का बँटवारा करना था न कि किसी को छोटा या बड़ा समझाने का। वर्ण व्यवस्था में गांधीजी का विश्वास इसलिए था क्योंकि इस पद्धति से अपनी रूचि और योग्यता के मुताबिक काम मिलता था। रूचि तथा योग्यता के अनुसार कार्य का बँटवारा ही गांधी का सिद्धान्त था। मैला ढोने वाले जमादार का लड़का भी मैला ही ढोये यह कोई जरूरी नहीं है। यदि उसके अन्दर डॉक्टर या इंजीनियर बनने की अदम्य साहस और योग्यता है तो उसे उसका पूरा हक मिलना चाहिए। यदि हम भी मैला ढोने के लिए विवष कर दें तो न तो उसका उद्धार होगा और न ही हमारा समाज प्रगति की ओर अग्रसर हो पायेगा। कालान्तर में जब वर्ण व्यवस्था टूटने लगी थी तो जातियाँ और उपजातियाँ बनने लगी ऐसी पूर्व मध्यकाल में अधिक हुआ, जब बड़ी संख्या में विदेशी जातियाँ भारत में आयी और यहाँ की सभ्यता और गई और अस्पृश्यता की भावना के चलते कुछ जातियाँ बिल्कुल निकृष्ट और अछूत मानी जाने लगी, जिनकी परछाई को भी अपवित्र मानकर उससे बचा जाता था।

गांधीजी का विचार था कि जब तक छुआछूत की भावना को जड़ से नहीं उखाडा जायेगा, भारतीय समाज कभी उन्नति नहीं कर सकेगा। इस सन्दर्भ में उन्हें महाराष्ट्र के निम्न जाति के सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले से भी प्ररेणा मिली। यही कारण है कि गांधी ने अछूतोद्धार के लिए अनेक क्रातिकांरी कदम उठाये। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि गांधीजी जो कुछ भी कहते थे उसके अनुसार स्वयं भी आचारण करते थे। उनकी कथनी ओर करनी में कोई भेद नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने साबरमती और सेवाग्राम आश्रम में सबसे पहले अछूतोद्धार का काम किया और हरिजन पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। दलितों को सम्मानजनक स्थिति देते हुए उन्होंने ही सर्वप्रथम उनके लिए हरिजन शब्द का इस्तेमाल किया। भारत में सदियों मे मैला उठाने और सिर पर ढोने की प्रथा सर्वाधिक निकृष्ट कार्य समझी जाती रही है। लेकिन गांधीजी ने कहा कि धार्मिक आधार पर अस्पृश्यता ईश्वर व मनुष्य दोनों के लिए अपराध व पाप है यह तर्क देकर कि हरिजन लोग हिन्दू धर्म के श्रेष्ठ नियमों का पालन नहीं करते हैं व खान–पान एवं रहन–सहन अच्छा नहीं है, अस्पृश्यता की प्रथा को उचित नहीं ठहरा सकते है क्योंकि मांसाहार तो ऊँचे वर्ग वाले लोगों के साथ–साथ इसाई व मुसलमान भी करते हैं। डॉक्टर एवं नर्स भी मांस रक्त, हड्डियों व मैला छूने का कार्य करते है तो उन्हें भी अस्पृश्य बनाया जाये। राष्ट्रीय उत्थान में भी अस्पृश्यता बाधक है राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए विदेशी शासन

को समाप्त करना होगा। किन्तु राष्ट्र के स्वतन्त्र हो जाने पर भी समाज का पाँचवा भाग अतः अस्पृश्य वर्ग को मुक्ति नहीं मिलती है। तो ऐसे में स्वराज अर्थहीन हो जाता है उच्च वर्ग को उनके द्वारा थोपी गई अस्पृश्यता की प्रथा के लिए प्रायश्चित करना चाहिए और ऐसा अपराध आगे न करें तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होगा।

अस्पृश्यता मानवता का भी अपमान है क्योंकि प्रत्येक मानव में ईश्वर का अंश होता है। इस आधार पर भी मानव, मानव में एकरूपता होती है। अफ्रीका में प्रवास के समय नस्लीय भेदभाव के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा के दौरान अस्पृश्यता के कटु अनुभव हुए। उन्होंने अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए हरिजर (ईश्वर की सन्तान) नाम देकर अस्पृश्यों को सामाजिक प्रतिष्ठा दी एवं समाज के सभी लोगों से आग्रह किया कि हमें बचपन से ही यह संस्कार मिलना चाहिए कि हम सब भंगी है और शारीरिक श्रम की शुरूआत पाखाना सफाई से करें। गांधीजी ने अस्पृश्यता के विरूद्ध जंग अफ्रीका से शुरू की और राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस की राजनीति का इसे अहम मुद्दा बना दिया। उन्होंने हरिजनोत्थान के लिए हरिजन सेवक संघ की स्थापना की और अस्पृश्यता के निवारण तथा हरिजनोत्थान के पक्ष में राष्ट्रीय जनमत जागष्त करने के लिए हरिजन (अंग्रेजी) तथा हरिजन सेवक (हिन्दी) साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन किया। उन्होंने हरिजन बस्तियों में जाकर उन्हें जागृत किया एवं शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया। हरिजन बस्तिओं में जाकर स्वयं यह कार्य बिना किसी हिचक के किया और अपने आश्रम वासियों तथा अनुयायियों को भी ऐसी ही करने का निर्देश दिया। इसका उद्देश्य यह था कि ऐसा करने से निम्न जातिय लोगों के अन्दर बैठी हुई छोटेपन की भावना बाहर निकलेगी और उनमें स्वयं को समाज के उच्च वर्ग के लोगों के बीच स्थापित करने का आत्म विश्वास पैदा होगा।

सवर्णों को गांधीजी ने इस बात के लिए बराबर चेतावनी दी और उन्हें याद दिलाया कि जो भी अपने जैसे मनुष्यों के कार्यों को निकृष्ट समझकर उन्हें नीचा समझेगा वह जघन्य अपराध तथा पाप का भागीदार होगा। उनके अनुसार एक मनुष्य के रूप में एक मेहतर की भी वही अहमीयत है जो एक डॉक्टर या इंजीनियर की है। अछूतोद्धार के अपने प्रयासों के क्रम में गांधीजी ने अंग्रेजी सरकार से भी इस दिशा में कानून बनाने का आग्रह किया था, इस कार्य में उन्हें डॉ, भीमराव अम्बेडकर जैसे नेताओं का सक्रिय सहयोग मिला। गांधीजी के प्रयासों के परिणामस्वरूप हरिजनों के मंदिरों में प्रवेश पर लगाई गई रोक धीरे–धीरे हटने लगी थी और आज वह लगभग पूरी तरह समाप्त हो चुकी है। हाँलाकि तत्कालीन समय में ही कुछ अंध विश्वासी और कट्टरवादी तत्वों ने प्रयासों का पुरजोर विरोध किया था लेकिन वे गांधी जी को अपने पथ से जरा भी विचलित न कर सके। उन्होंने कहा था कि चूँकि अछूत माने जाने वाला वर्ग सर्वाधिक कमजोर है इसलिए परम पिता ईश्वर की दृष्टि में भी वह सर्वाधिक प्रिय है। यही कारण है कि उन्होंने अछूतों को हरिजन की संज्ञा से विभूषित किया। उनके राजराज्य और सर्वोदय का सिद्धान्त सर्वधर्म समभाव" और "सर्वजन हिताय" पर आधारित है, जिसमें समाज के लोगों का अधिकार प्राप्त हो।

गाँधीजी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता इसी से सिद्ध होती है कि उनके आदर्श

से प्रेरित होकर अनेक फिल्मे भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी बनी है। रिचर्ड एटन बरो ने प्रभावात्पादक बेन किंग्सले अभिनीत "गाँधी" फिल्म बनाई जब बिहार के किसान राजकुमार शुक्ला ने उन्हें बिहार में आमंत्रित किया और उन्होंने चम्पारन में आन्दोलन किया। इसी दौरान उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के साथ कुरीतियों और अंधविश्वासों के उन्मूलन को शामिल करके अपने नजरिये में समस्त मानवता के दुख को सम्मिलित किया। यह विवरण श्याम बेनेगल ने "मेकिंग ऑफ महात्मा" में सिनेमाई गुणवत्ता के साथ प्रस्तुत किया है। गाँधीजी का विश्वास था कि राजनीतिक स्वतंत्रता मात्र से कुछ नहीं होगा, सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता मानवता की रीढ़ की हड्डी है। उनके हरिजन में छपे एक लेख से प्रेरित होकर भारती साराभाई ने पद्य में एक नाटक लिखा, जिसमें शरीर से लाचार और कोई तीर्थ यात्रा पर ले जाने का उत्तरदायित्व नहीं लेता। एक दिन वह स्त्री तीर्थ यात्रा के लिए बचाये धन से अपने गाँव में दलितों और हरिजनों के इस्तेमाल के लिए एक नया कुँआ खुदवाती है। इस कुँए के बनने के बाद उस स्त्री के मन के विचार इस तरह भारती साराभाई ने लिखे "मैं शायद काशी नहीं देख पाऊँगी मेरे इस कायारूपी पात्र को नहीं भेजेगा कोई सांसारिक तीर्थ स्थानों में, किन्तु मुक्त हंस स्त्री मेरी आत्मा ला सकेगी इस धरती पर फिर वापस, एक नन्हे कुँए में माँ गंगा के इस पवित्र जल के साथ खोई हुई मेरी शक्ति।" गाँधीजी ने बिहार के चंपारन आन्दोलन के बाद ही यह निर्णय लिया कि वे शादी या किसी उत्सव के ऐसे आयोजन में नहीं जायेंगे जिसमें दलित व हरिजन आमंत्रित नहीं किये जायेंगे। गाँधीजी का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में पड़ा। साहित्य में प्रेमचंद गाँधी के आदर्श का ही प्रतिनिधित्व करते है। पत्रकारिता में इसी तरह का काम सच्चिदानंद सिन्हा, कस्तूरी श्रीनिवास, शिवराज के नटराजन सीवाई चिन्तामणि इत्यदि ने किया। गाँधीजी के आदर्ष का निर्वाह फिल्मों में सम्पत लाल ने महात्मा विधुर, बाबूलाल पेंटर, षांताराम व महबूब खान ने किया। भारत में सामाजिक मूल्य हमेशा सतह के नीचे प्रवाहित रहते है और गांधी जी जैसे कुछ बिरले लोग इस लहर को कुछ समय के लिए सतह से ऊपर प्रवाहित करने में सफल होते है।

## संदर्भ ग्रंथ सुची :–

1. *शर्मा, प्रभुत्त – राजनीतिक विचारों का इतिहास, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।*
2. *गाँधीजी म.क. – सम्पूर्ण गाँधी बाडमय सूचना विभाग भारत सरकार, नई दिल्ली।*
3. *चतुर्वेदी, मधुकर ष्याम – प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।*
4. *मशरूवाला, किशोरीलाल – गाँधी विचार दोहन नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदावाद।*
5. *भट्टाचार्य, प्रभात कुमार – गाँधी दर्शन कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।*
6. *नारायण, इकबाल – प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, इन्दौर।*